Artistic Narration, Vol. VIII, 2017, No. 2: ISSN (P) : 0976-7444 (e) : 2395-7247Impact Factor 3.9651 (ICRJIFR)
UGC Approved Journal No. 43285

पहाड़ी चित्रशैली के चित्रों की महत्ता

डॉ0 नीलम कांत

असि0 प्रोफे0 व विभागाध्यक्ष, चित्रकला विभाग, श्रीमती बी0डी0 जैन गर्ल्स डिग्री कॉलेज, आगरा

Reference to this paper should be made as follows:

डॉ0 नीलम कांत,
पहाड़ी चित्रशैली के चित्रों की महत्ता,
Artistic Narration 2017,
Vol. VIII, No.2, pp.13- 21
http://anubooks.com/?page_id=485

सारांश

पहाड़ी चित्रकला में छाया का प्रयोग प्रायः प्राकृतिक दृश्य चित्रों में अधिक किया गया है। चित्रकार ने कहीं आकाश में बादलों की लाल तथा सुनहरे रंगों की इन्द्रधनुषी आभा विखेरी है तो कहीं अम्बर में सघन सन्ध्या कालीन प्रभाव चित्रित किया है जिसमें छाया वाले रंगों – काले, भूरे, नीले बादल, सुनहरी और लाल पृष्ठभूमि में पहाड़ियों का संयोजन, पहाड़ी चित्रकला की विभिन्न शैलियां में हुआ है। इन टीलों तथा पहाड़िया पर छाया पर प्रकाश का प्रयोग किया गया है। मानव आकृतियों में छाया का प्रयोग आँख, नाक, ओंठ के पास तथा कान के नीचे जबड़े के पास गहराई तथा गोलाई दिखाने के लिये किया गया है। इस प्रकार की छाया को दिखाने के लिये महीन तथा पास – पास काली तिरछी कोमल रेखाओं का प्रयोग किया गया है। पहाड़ी चित्रों में सुकोमल छाया के प्रयोग द्वारा गोलाई लाने का प्रयास किया गया है।

पहाड़ी चित्रकला शैली में कुंज, उपवन, जंगल इत्यादि दिखाने के लिये असमतल भूमि का चित्रांकन मिलता है जिसे पीले और पर्वतों के रूप में चित्रित किया गया है। यह चित्र के तीनों भागों – अग्र, मध्य व पृष्ठभूमि में चित्रित हैं। पर्वतों को उपमान के रूप में चित्रकारों ने कम प्रयोग किया है केवल कहीं – कहीं वीर पुरूषों दृढ़ता[1] एवं नायिका के स्तनों की कठोरता को चित्रित करने के लिये पर्वतों को उपमान रूप में चित्र की पृष्ठभूमि में अंकित किया गया है।

मुख्य शब्द – *पहाड़ी चित्रशैली, छाया प्रकाश, रंग रेखांकन, कांगड़ा शैली, गड़वाल शैली, गुलेर शैली, दुर्गा, प्रकृतिक सौन्दर्य, देवी स्वरूप पार्वती, शिव।*

डॉ0 नीलम कांत

प्रस्तावना :–

यह सर्वदा सत्य है कि किसी भी इतिहास संस्कृति एवं समाज को प्रस्तुत करने में कला की महती भूमिका सिद्ध साबित होती रही है इस धरा पर जब मनुष्य ने अपने आपको पहचानने की कोशिश की तो उसका परिचय पहाड़ी चित्रकला की देवीय महान जटिल शक्तियों से हुआ और इन शक्तियों के समक्ष उसने अपने आपको प्रस्तुत करने के लिये हाथ से बनायी हुई लकीरों का सहारा कलाकृति का निर्माण करने में किया जो आज के युग की परम्परा व सांस्कृतिक धरोहर से जानी जाने लगी। ये रेखाचित्र एक लिपि का भी कार्य करते हैं साथ ही पशु पक्षियों का अंकन भी पहाड़ी शैली में काफी रूचि पूर्वक किया गया है। धीरे – धीरे यह प्रक्रिया मानवाकृति के अंकन में परिवर्तित होते हुये भारतीय संस्कृति सभ्यता व परम्परा का रूप बनकर सबके सम्मुख प्रदर्शित हुई। इसी का वर्णन इस शोध पत्र में देने का प्रयास किया गया है।

पहाड़ी चित्रकला के चित्रों में प्राप्त छाया प्रकाश व रंगों के अंकन का विश्लेषण कर उससे शब्दों द्वारा विवरण देने का प्रयास किया गया है जिससे पहाड़ी चित्रकला की महत्ता से सबको अवगत कराया जा सके।

''प्रकाश का अभाव जो उसकी किरणों के कारण किसी स्थान पर होता है या उजाला डालने वाली वस्तु और किसी स्थान के बीच कोई दूसरी वस्तु पड़ जाने के कारण उत्पन्न कुछ अंधकार या कालिमा अथवा थोड़ी दूर तक फैला हुआ अंधेरा जिसके आस – पास का स्थान प्रकाशित हो गया हो''। वह छाया कहलाता है या चित्र वस्तु का वह भाग जहाँ अंधेरा रहता है, छाया कहलाता है। छायांकित या अंधेरे स्थान के किनारे पर विपरीत दिशा से आने वाले प्रकाश से अंधकार अथवा छाया की मात्रा कम हो जाती है। यह प्रकाश जितना अधिक होगा अंधकार उतना ही कम हो जाता है। प्रकाश वह है जिसके भीतर पड़कर चीजें दिखायी पड़ती हैं, वह जिसके द्वारा वस्तुओं का रूप नेत्रों को दृष्टि–गोचर होता है। अर्थात वह तत्व या शक्ति जिसके योग से वस्तुओं का रूप आंखो को दिखायी देता है। इसको हम दीप्ति, आलोक, ज्योति, आभा, चमक, तेज इत्यादि नामों से जानते हैं। प्रकाश भी अति प्रकाश व मध्यम प्रकाश हो सकता है। वस्तु पर पड़ने वाले सर्वाधिक प्रकाश को अति प्रकाश और मध्यम प्रकाश में वस्तु पर प्रकाश और अंधकार का मिश्रित प्रभाव होता है।

कांगड़ा एवं गढ़वाल शैली में पहाड़ों पर प्रकाश एवं छाया का प्रभाव दिखाकर चित्रों को अत्यधिक प्रभावशाली बना दिया है। पहाड़ियों के अतिरिक्त कागड़ा शैली में वृक्षों पर भी छाया प्रकाश का सुन्दर अंकन हुआ है। कांगड़ा तथा गढ़वाल शैली के अनेक चित्रों में पहाड़ियों के ऊपरी किनारों को हल्का चित्रित करने के लिये स्थानीय रंग को श्वेत रंग के मिश्रण से मिलाकर रंगा गया है। इसके पीछे की पहाड़ियों के पास ही कुछ छाया का अंकन किया गया है जिससे पहाड़ियां में उभार आ गया है। कहीं – कहीं यह प्रकाशीय प्रभाव हरी चट्टानों में बादमी अथवा हल्के गुलाबी रंग से भी दिये गये हैं। ''पहाड़ियों के निचले भागों में गहरे रंग से बारीक रेखा वर्तना के द्वारा छाया तथा तृणाच्छान का एक साथ आभास दे दिया गया है। इस तरह इस शैली की पहाड़ियों में उभार देने के हेतु प्रकाश – छाया का प्रयोग एक सीमित रूप में उपलब्ध होता है। कहीं – कहीं इस पद्धति से चट्टानों के घनत्व तथा गढ़नशीलता

का भी प्रभाव उत्पन्न हो गया है।[2] लेकिन हर जगह चित्रकारों को यह सफलता नहीं मिली है। जहाँ पर पहाड़ी के घानी रंग में प्रकाश का हल्का रंग ठीक से मिश्रित नहीं हुआ है वहाँ पर प्रकाश हल्के रंग की एक अलग–सी पट्टी के रूप में दृष्टिगोचर होता है। इस प्रकार चित्रों में पहाड़ियों का चित्रण स्वाभाविक नहीं है। पहाड़ी की अग्रभूमि में बने वृक्षों पर छाया प्रकाश का सुन्दर रूप दिखायी पड़ता है। वृक्षों में पत्तों के समूहों के बीच–2 में गहरी व मध्यम छाया के प्रयोग से वृक्षों में घनापन उभर कर आया है। आम वृक्षों में ऊपर अथवा एक ओर से जाने वाले प्रकाश में पतियों के गहघे व हल्के हरे और कहीं – कहीं लाल – भूरे में श्वेत या पीला रंग मिलाकर उसे हल्का करके लगाया है। इस तरह पत्तों की आकृति स्पष्ट हो गयी है इससे वृक्षों को पहचानने में भी सुविधा होती है।

एक दिशा से आने वाले प्रकाश से वस्तुओं की विपरीत दिशा में जो अंधकार अथवा छाया दिखायी देती है उसका चित्रण पहाड़ी चित्रकला में दुर्लभ रूप में प्राप्त हुआ है। एन0सी0 मेहता का कथन है – ''कांगड़ा शैली के चित्रकार हिमालय की पहाड़ियों पर पड़ने वाले प्रकाश के विभिन्न प्रभावों से उदासीन रहे हैं।

परन्तु ध्यान से देखने पर ज्ञात होता है कि पहाड़ियों के चित्रण के रंग में जो अन्तर दिखाई देता है, उसका सम्बन्ध ऋतु अथवा समय से स्थापित किया जा सकता है। प्रातःकालीन दृश्य चित्रों की पहाड़ियों में पीला अथवा हल्के धानी रंग का प्रयोग किया गया है तथा सूर्योदय का भी अंकन है। संध्याकालीन सूर्यास्त के चित्रों में पहाड़ियों पर गुलाबी प्रकाश का प्रभाव स्पष्ट दृष्टि–गोचर होता है तथा अम्बर में संध्याकालीन बादल छाये हुये दिखाये गये हैं। किन्तु ऐसी चित्र अधिक नहीं बने हैं, अधिकता उन चित्रों की जिनमें आकाश में तो समय का प्रभाव दिखाया गया है परन्तु पर्वतों पर नहीं।

चम्बा शैली के शिव पार्वती पोखर में चित्र में सरिता के किनारे दो छोटी पहाड़ियाँ हैं जिन पर छाया एवं प्रकाश का सुन्दर प्रभाव है। पहाड़ी सूर्योदय की अरूणिमा चित्र को आकर्षक बना रही है। गढ़वाल शैली की विशेषताओं में छाया प्रकाश का महत्व है छाया प्रकाष कुछ इस प्रकार का है कि कहीं – कहीं उदास वातावरण का आभास होता है जो कि कांगड़ा शैली में नहीं है।

पहाड़ी चित्रकला की एक और विशेषता प्रतीकात्मकता एवं आदर्शवादिता है। ''मानव जाति के इतिहास का अध्ययन करने पर हमें ज्ञात होता है कि जब पहली–2 बार शस्यश्यामला धरती की गोद में जन्म लेकर व्यक्ति की चेतना ने अपनी तरल तन्द्रिल पलकों का उन्मेश किया होगा तब उसके दृष्टि

पथ पर प्रकृति के अनेक सुकुमार, भीषण एवं विराट चित्र सहसा ही आकर उभर गये होंगे। जीवन की पहली–2 धड़कर के साथ वन्य निर्भरिणी के प्रतिफल प्रवाहभान जलसीकरों का मोहक संगीत, सिन्धु की उत्ताल लहरों का भैरवनाद, मेद्यों की सतत पीयूष वर्षिणी वीणा की कोमल भंकार एवं संगीतमय नृत्य सुनकर उसकी आत्मा अलौकिक आनन्द की स्रोतस्विनी में आकंठ निमिज्जत हुई होगी। प्रभात की स्वर्णित रशिमयों ने, उपवन में तुशारमंडित कर – पल्लवों से उसे जगाया होगा और दिवस की प्रोज्जवल धूप ने उसे कर्मरत होने का पाठ पढ़ाया होगा। सांध्य गगन में झिलमिलाते हुये और दिवस की प्रोज्जवल धूप ने उसे कार्यरत होने का पाठ पढ़ाया होगा सांध्य गगन में झिलमिलाते हुये राजताभ नक्षत्रमंडल, एवं पर्वत–मालाओं के आंचल से झांकते हुये चन्द्रमा ने लोरियों सुना–सुनाकर उसके श्रम शिथिल अंगों को

तन्द्रिल विश्राम की छाया प्रदान की होगी। कभी भैरव जलप्लावन ने, व्यालों की सी फल फैलाती हुई सिन्धु उर्मियों से उत्कम्पित कान्तार की सघन तरूराजियों ने उसके सहज मृदुल मन में भय और आंशका की भावना भर दी होगी। तभी से उसने अपने जीवन की सुविधायें देने के लिये प्रकृति की ओर मित्रता का हाथ बढ़ाया होगा। सृष्टि के प्राचीनतम साहित्य ऋग्वेद की अनेक ऋचाओं एवं सामवेद की मन्द गम्भीर गीतिकाओं में मानव का प्रकृति के प्रति आदर एवं मित्रतपापूर्ण आह्वन सुनाई पड़ता है। मानव स्वभाततः सौन्दर्यप्रिय प्राणी है। उसकी सहज वृत्ति का नैसर्गिक सम्बन्ध प्रकृति के कोमल एवं उदात स्वरूपों से स्थापित हो गया। इन सभी का चित्रण काावियों ने आदर्श प्रतीक के रूप में किया है और इन्ही प्रतीकात्मक एवं आदर्शवादिता को पहाड़ियों ने चित्रों में अंकित किया है। इस प्रकार हम देखते हैं कि प्रकृति से उपमान लेकर उन्हें प्रतीकात्मक रूप से चित्रित किया गया है। ''मानव की सहज प्रेम – भावना को प्रकृत प्रेम कहते हैं, अर्थात नर–नारी की सहज प्रीति ही प्रकृत प्रेम है। इस प्रेम का आलम्बन पार्थिव होता है, अतः इसमें वासना का भाव होना स्वाभाविक ही है। क्योंकि शरीर सुख की उत्कट इच्छा से प्रेरित होकर जिस प्रेम का निवेदन किया जाता है, वह स्वाभावतः ही वासनात्मक होता है। हिन्दी साहित्य में भक्तिकालीन काव्य सात्विक प्रेम का और रीति कालीन काव्य प्रकृत प्रेम का उदाहरण है। इस प्रकृति में से ''कुछ प्रतीक तो यथार्थ आकृतियों पर आधारित होते हैं, जैसे – जटा जूट, सिर से निकलने वाली जलधारा, और नाग भूषण, शिव के प्रतीक हैं, और कुछ आरोपित होते हैं, जैसे – शिवलिंग। सानिध्य पाकर भी कुछ वस्तुयें प्रतीक वन जाती हैं, जैसे मोरपंख और मुरली कृष्ण का प्रतीक है। सिर के पीछे आभा मण्डल देवत्व का प्रतीक है। पुष्ट उरोज तथा भारी नितम्ब यौवन एवं मातृत्व का प्रतीक हैं वेणी गुफंन प्रेम का प्रतीक है। कलाकार नये–2 प्रतीकों की उत्पत्ति करते रहते हैं। प्रकृति में व्याप्त वृक्ष–लताओं, पुष्प, बादल, बिजली, चन्द्रमा, सरिता तथा जीव–जन्तु को प्रतीक रूप में प्रयोग कर पहाड़ी चित्रकारों ने प्रणय को उदीप्त किया है।

सरिता के अंकन में कहीं तो नदी शांत निश्चल तो कहीं उमड़ती हुई है जल का वेग प्रेम की उत्तेजना का प्रतीक है उफनती सरिता का अंकन प्रेमियों के बदलते प्रेम को उत्तेजिता करता है भिन्न – भिन्न स्थानों पर प्रेमियों के दृश्य की दशा को ध्यान में रखते हुये सरिता अग, मध्य तथा पृष्ठभूमि में चित्रित की गयी है, अग्र भूमि में इसका अंकन बहुलता से हुआ है। बसोअली के चित्रों में सरिता को धजजी अथवा पट्टी की तरह अग्रभूमि में अंकित किया गया है। आस–पास की घास का प्रतिबिम्ब जल में पड़ रहा है। अन्य शैलियों जैसे – गुलेर, कांगड़ा, कुल्लू में भी नदी अग्रभूमि में बनायी गयी है सीधी पट्टी के रूप में सरिता शांति का बोध कराती है। इस प्रवाह शांत है जो प्रेम में स्थरता का प्रतीक है। कांगड़ा में तरंगित रेखाओं द्वारा जब वेग दिखाने की चेष्टा की गयी है तब उसमें आलंकारिक प्रभाव आ गया है कहीं पर नदी कम चौड़ी संयमित रूप में बैठी है तो कहीं कटावदार कोणीय तटों से युक्त अग्रभूमि की ओर बैठी दिखायी गयी है। हल्के हरे रंग की असमतल भूमि व हरे–हरे टीलों के सानिध्य से इसकी हल्की नीली, बैंगनी रंग योजना में निखार हा गया है। सांध्याकालीन वातावरण में नदी के जलकरण गहरे लाल कत्थई रंगों से आपूरित है।

पहाड़ी चित्रकला के अन्तर्गत तालाब का अंकन स्थान – स्थान पर मिलता है कहीं प्राकृतिक वातावरण में जलकुण्ड या तालाब का चित्रण है और कहीं भवनों के अन्तर पक्के जलकुण्ड बनाये गये हैं। यह सरिता

की तुलना में कम चित्रित हुये हैं इन तालाबों में कमल पुष्प चित्रित हैं कमल कली के साथ पूर्ण विकसित कमल का अंकन वयःसन्धि का प्रतीक है।

पहाड़ी चित्रकला में वृक्षों में प्राकृतिक सौन्दर्य न होकर अलंकरण अधिक है। कहीं पत्ते गोल तथा चौड़ी पत्तियों के हैं और कहीं चक्रवृत पुष्प गुच्छों के समान पत्तियों के समूह वाला वृक्ष है। कांगड़ा शैली में इसे यथार्थ रूप में चित्रित करने का प्रयास किया गया है। जबकि बसहौली व कुल्लू में चित्रण अलंकारी है। कांगड़ा शैली में सूखे पेड़ के चिकनों तनों वाले दृश्य का अन्तर है जिसमें शिव, पार्वती के सिरहाने बैठे हैं।[1] कांगड़ा शैली का यह चित्र एक अद्वितीय चित्र है जिसमें वृक्षों को प्रतीक रूप में सुन्दरता से व्यक्त किया गया है। फल, फूल लताओं से युक्त वृक्ष प्रणय प्रतीक के रूप में पहाड़ी चित्रकारों ने कुशलता से चित्रण किया है।

पहाड़ी चित्रकारों ने पशु–पक्षियों को आदर्श प्रतीक के रूप में अधिकतर चित्रित किया है। पहाड़ी चित्रकला की अनेक शैलियों में मयूर, चूहा, नन्दी, शेर का चित्रण मिलता है। किन्तु पक्षियों की संख्या अपेक्षाकृत कम है।

पहाड़ी चित्रकला में यथार्थ की अपेक्षा आदर्श का ही चित्रण अधिक किया गया है। संसार में हम जिस किसी पर दृष्टि डालते हैं यदि कलाओं में भी वह प्राप्त हो तो हमारी कलाओं में रूचि न रहेगी। इसीलिए कलाकार वस्तुतः संसार में जैसा है वैसा चित्रण न करके जैसा होना चाहिए वैसा चित्रण करता है। जहाँ से चाहिए की भावना आरम्भ होती है वहीं से आदर्शवाद प्रारम्भ हो जाता है। इस प्रकार हम देखते हैं कि पहाड़ी शैली में शिव का चित्रण एक आदर्श प्रेमी के स्वरूप में तथा प्रतीकात्मक को पूर्णरूप से व्यक्त करते हुये हुआ।

भैरव एवं दुर्गा – समय 1800, मंडी पहाड़ी शैली का चित्र 'आर्वर' की पुस्तक में मुद्रित हुई माप 279×176 है। नम्बर आई0एस0 45, 1954 रोथेन्सटाइन संग्रह विक्टोरिया एवं एलबर्ट संग्रहालय, लन्दन।

चित्र संख्या ०१ भैरव एवं दुर्गा

प्रस्तुत चित्र में सोलह भुजाधारी भैरव विभिन्न आयुधों से युक्त, असंख्य सर्पों को धारण किये सामने बैठी दुर्गा के सम्मुख नृत्य कर रहे हैं, उनके सम्मुख श्वान है तथा दुर्गा के सम्मुख सिंह है।

नन्दी का सहारा लिये शिव, पार्वती भांग देती :— पहाड़ी शैली, नं0 418, संग्रह : राजकीय संग्रहालय, चंडीगढ़।

[illegible] संख्या – [illegible] पहाड़ी शैली – नंदी का सहारा लिये शिव, पार्वती भांग देती

प्रस्तुत चित्र में शिव नंदी का सहारा लिये दोनों हाथ टिकाये खड़े हुये है। पार्वती शिव को भांग का पात्र दे रही है। जिसे उनका सर्प पी रहा है। नंदी गर्दन को घुमाकर दोनों को निहार रहा है। शिव ने पैरों में पाजेव पहनी है। पार्वती ने घेरदार लहंगा, तथा ओढ़नी ओढ़ रखी है। पृष्ठभूमि में नदी है तथा किनारे पर नंदी खड़ा है। अण्डाकार हाशियेवद्ध का यह चित्र अत्यन्त सुन्दर है।

उमा — महेश्वर :— गुलैर शैली, संग्रह राष्ट्रीय संग्रहालय, नई दिल्ली। सपाट चित्र तल पर दोहरी रेखा द्वारा परिधि खींचकर इसी में बैठे 'उमा — महेश्वर' को दर्शाया गया है। सिर पर छत के स्थान पर कमल पुण्य ही लगा हुआ है। चित्रकार द्वारा इस रेखाचित्र में पृष्ठभूमि हेतु किसी अंकन को स्थान नहीं मिला है। कमल पुण्य की छाया द्वारा चित्र का प्रतीकात्मकता का आभास मिलता है।

चित्र संख्या – 03 गुलेर शैली, उमा महेश्वर

सिंह वाहिनी अष्ट भुजा दुर्गा व काली सहित शिव युद्धरत :– गुलैर शैली, संग्रह : राष्ट्रीय संग्रहालय, नई दिल्ली –

चित्र संख्या – 04 गुलेर शैली, सिंहवाहिनी दुर्गा व काली सहित शिव युद्धरत

प्रस्तुत रेखाचित्र में सिंहवाहिनी अष्टभुजा दुर्गा व काली शिव के साथ, तथा अश्वारोही व पदाति सेना के मध्य दो घोड़ों के रथ पर आता महादैत्य अंकित है। यह राक्षस शुंभ–निशुंभ और चिक्षुर में से कोई हो सकता है। चित्र इसका स्पष्टीकरण नहीं करता है कथा की दृष्टि से चित्र कथात्मक ही है। क्योंकि समस्त देवी चरित्र समयान्तर में दानवों से ही युद्ध के माध्यम से मानवेतर चरित्र व महाशक्ति के

रूपों में प्रतिष्ठित है। कलाकार द्वारा असुर संहारक अष्ट भुजी दुर्गा का अंकन भक्ति भावाधीन ही किया गया है।

दौड़ते सिंह पर सवा दुर्गा :– कुल्लू शैली, संग्रह, राष्ट्रीय संग्रहालय, नई दिल्ली।

चित्र संख्या – 05. कुल्लू शैली, दौड़ते सिंह पर सवार दुर्गा

चित्र में दौड़ते सिंह पर सवार अष्टभुजी दुर्गा ही चित्रकार का व चित्र का केन्द्र है, पृष्ठभूमि से सम्बन्धित चित्र में कोई अंकन नहीं है। सपाट फलक पर दुर्गा को रेखांकित ही किया गया। सिंह पर सवार देवी का अंकन आर्दशत्मकता को व्यक्त करता है।

निष्कर्ष :– अतः कहा जा सकता है कि चित्रकार ने पहाड़ी चित्रशैली के अंकन में चित्र में आने वाली अनेकानेक विशेषताओं का अंकन पूर्ण कुशलता के साथ करने में पूर्ण सफलता हासिल की है। जिसके माध्यम से इस शैली की गुणवत्ता को भलीभाँति सभी को अवगत कराने में सहायता प्राप्त हुई।

संन्दर्भ ग्रन्थ सूची –

1. हिन्दी शब्द सागर, तृतीय भाग, पृष्ठ – 1632
2. डॉ. अग्रवाल गिर्राज किशोर : रूपांकन, पृष्ठ – 88
3. हिन्दी शब्द सागर, छठा भाग, पृष्ठ – 3130
4. रंघावा एम0एस0 :– कागड़ा रागमाला पेंटिग्स, द टाइम्स ऑफ इंडिया, एनुअल 1967, पृष्ठ – 42, आकृति – 2
5. खंडालवाला : स्टाइल इन इंडियन पेटिंग, पृष्ठ – 20
6. मेहता एन0सी0 : स्टडीज इन इंडियन पेटिंग, पृष्ठ – 56, 57

7. शर्मा लोकेश चन्द्र : भारत की चित्रकला का संक्षिप्त इतिहास, पृष्ठ – 142
8. शर्मा देवन्द्र 'इन्द्र' : बिहारी सतसई, पृष्ठ – 52
9. डॉ. भाटी देशराज सिंह : सूरदास और उनका साहित्य, पृष्ठ – 170
10. डॉ. अग्रवाल गिर्राज किशोर : कला और कलम, पृष्ठ – 5
11. खंडाल वाला, मोती चन्द तथा प्रमोद चन्द : निनियेचर्स फ्राम खंजाची कलेक्शन, पृष्ठ – 50
12. रंघावा एम0एस0 : बसोहली पेटिंग, पृष्ठ – 84
13. आर्चर उल्लू जी : इंडियन पेटिंग फ्राम द पंजाब हिल्स, पृष्ठ – 207
14. खंडालवाल कार्ल : पहाड़ी पेटिंग, पृष्ठ – 27